M.A. 1st Semester Examination, 2012

HINDI

PAPER – HIN-102

Full Marks : 40

Time : 2 hours

Answer **all** questions

The figures in the right hand margin indicate marks

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable

Illustrate the answers wherever necessary

किन्हीं *दो* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 12 × 2

1. मीरा की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए। 12

2. "सूरसागर का सबसे मर्मस्पर्शी और वाग्वैदग्ध पूर्ण अंश 'भ्रमरगीत' है, जिसमें गोपियों की वचनवक्रता अत्यंत मनोहारिणी है" — इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए। 12

3. "रामचरित्मानस' आदि से अंत तक समन्वय का काव्य है" — इस उक्ति की तर्कपूर्ण समीक्षा कीजिए। 12

4. घनानन्द का काव्य-सौन्दर्य उद्घाटित कीजिए । 12

5. किन्हीं *दो* पद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8 × 2

(*क*) जहाँ-जहाँ पद-जुग धरई । तहिं-तहिं सरोरुह झरई ।।
जहाँ-जहाँ झलकए अंग । तहिं-तहिं बिजुरि-तरंग ।।
कि हेरलि अपरुब गोरि । पइठलि हिअ मधि मोरि ।।
जहाँ-जहाँ नयन विकास । ततहिं कमल परकास ।।

(*ख*) झगरा एक नवेरो राम, जें तुम्ह अपने जन सूँ काम ।
ब्रह्म बड़ा कि जिनि रू उपाया, बेद बड़ा कि जहाँ थैं आया ।
यह मन बड़ा कि जहाँ मन मानै, राम बड़ा कि रामहि जानै ।
कहै कबीर हूँ खरा उदास, तीरथ बड़े कि हरि के दास ।

(*ग*) म्हारो प्रणाम बाँके बिहारीजी ।
मोर मुगट माथ्याँ बिराज्याँ, कुण्डल, अलकाँकारी जी ।
अधर मधुर धर वंशी बजावाँ, रीझ रिझाँवाँ, ब्रजनारी जी ।
या छबि देख्याँ मोहया मीराँ मोहन गिरधरधारी जी ।

(*घ*) रावरे रूप की रीति अनूप, नयो-नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै ।
त्यौं इन आँखिन बानी अनोखी, अघानि कहूँ नहि आनि तिहारियै ।
एक ही जीव हुतौ सु तौ बारयो, सुजान सँकोच और सोच सहारियै ।
रोकी रहै न, दहै घनआनंद बावरी रीझि के हाथन हारियै ।